कोरोनावतार नहीं, करुणावतार लीजिए

✍ डॉ॰ रीतामणि वैश्य

चारों तरफ मृत्यु का तांडव है
हरेक के हृदय में विष घुला है
मनुष्य को मनुष्य से मिलने में
शंका है
भय है
और अंत में जीवन का क्षय है।
सृष्टि में मृत्यु का महाप्रलय है
महाप्लावन की गति दुर्जेय है।

मनुष्य ने मानवता को दफना दिया
केवल भोग और विलास को अपना लिया।
दूसरों को हराने की होड़ है
विजय मुकुट पहनने की भागदौड़ है।
अपनी दफली अपना राग है
कमरे में बंद रहना अपना भाग है।
उन्नति के शिखर पर खड़ा मनुष्य
प्रकृति को खत्म करने पर अड़ा है।
जल,स्थल,हवा,अग्नि और आकाश पर
झण्डा गाड़ा गया विकास का।
विज्ञान की शक्ति से वह भक्तिहीन हो चुका है।

सर्वशक्तिमान मनुष्य किससे डरता है?

जो डरता है,वह तो मरता है !

अजेय,विजेय मनुष्य का अट्टहास

संसार को बनाया अपना दास।

ब्रह्मास्त्र भी लाचार जिसके साथ

पारमाणविक हथियार है उसके पास

करता है वह महानाद

मिला उसे युग का सर्वेश्रेष्ठ आशीर्वाद।

न दिन को उसका अंत है, न रात

न देव या दानव उसे दे सकता है मात।

तप के साधनों से होकर सुसज्जित

अहंकार में होकर मज्जित

बना वह मानव आधुनिक युग का

हुआ यही संयोग कोरोना का।

कलिर शेषत हैबा कल्कि अवतार

काटि मारि म्लेच्छक करिबा बुंदामार॥[1]

कोरोना के रूप में यही क्या कल्कि अवतार है !

पूरब,पश्चिम,उत्तर,दक्षिण में विराट नरसंहार है !

न दिन या रात को वह वध करता है

मृत्यु का रथ पल-पल हर पल चलता है।

मानो कलि के अंत में कल्कि

सृष्टि के विकास की कथा कहता है।

न वह देव है, न मानव; न आकार है न स्वरूप

अदृश्य होकर बदलता है हर क्षण अपना रूप

वायु वेग से देश-विदेश को चपेट में लेता है

न वह रूप-रंग देखता है

न जात-पात

न अमीर-गरीब

बस सबको साफ करता है।

जब जब होई,धरम कै हानि। बाढ़हि असुर,अधम अभिमानी॥

करहि अनीति,जाई नहीँ बरनी।सिदही विप्र,धेनु सुर धरनी॥

तब तब प्रभु धरि,विविध शरीरा । हरहों कृपा निधि,सज्जन पीरा॥

मार-काट,हिंसा,पराभाव से धरती दलित है

अधर्म ,पाप,दुराचार से मानवता पतित है।

हो रहा क्या प्रकृति का पुनर्निर्माण, है यह रुद्र रूप

ले रही है सृष्टि अपना प्रारूप ?

जिसे जीना है,संयम में रहना है

जिसे नहीं स्वीकार, उसे विसर्जित होना है।

हर अंधेरी रात के बाद सुबह सुंदर आती है

एक दूजे के लिए जिए सब,सत्ययुग की प्रतिष्ठा होनी है।

सृष्टि के कण-कण पर जीव-जड़ सबका अधिकार है

प्रेम,मैत्री,करुणा,शांति,सहानुभूति प्रकृति को स्वीकार है।

कोरोनावतर नहीं दयासागर, करुणावतार लीजिए

मनुष्य को मनुष्य के लिए मनुष्य के रूप में जीने दीजिए।

तहस-नहस हुई है सृष्टि

कृपा की वृष्टि कीजिए

सफ़ेद कबूतर उड़ाने दीजिए

जीवन का गीत हमें फिर से गाने दीजिए।

एक दूसरे के गले मिलकर

विश्वमैत्री का पाठ पढ़ने का एक अवसर अवश्य दीजिए।

टिप्पणी:

*1 ये पंक्तियाँ असम के भक्तिकालीन महाकवि श्रीमंत शंकरदेव द्वारा रचित अमर रचना 'कीर्त्तन-घोषा' से हैं। इन पंक्तियों का अर्थ है कि कलि युग के अंत में कल्कि अवतार लेंगे। वे नीच लोगों को मार-काटकर समाप्त कर देंगे।